22

निराशा के लिए परमेश्वर की दवाई

(11:1-7)

इब्रानियों 11 हमें केवल विश्वास पर एक बड़ा अध्याय देने के लिए ही नहीं लिखा गया था, बल्कि आरम्भिक पाठकों के विश्वास की कमी के कारण दिया गया। वे पाठक निराश हो गए थे और अब छोड़ जाने को तैयार थे। उन्हें विश्वास की आवश्यकता थी (देखें 10:38)। शायद वे सोच रहे थे, ''हमारा परमेश्वर में विश्वास है, परन्तु *फिर भी* हमें ये सब परेशानियां हैं!'' यह बात हमें अध्याय 11 पर ले जाती है, जहां परमेश्वर की प्रेरणा पाए लेखक ने उन्हें (और हमें) बताया कि *वास्तविक* विश्वास क्या है।

इब्रानियों 11 में हमें ''निराशा के लिए परमेश्वर की दवाई'' मिलती है अध्याय का आरम्भ विश्वास के एक विवरण के साथ होता है। इस विवरण में कई महत्वपूर्ण सच्चाइयां हैं, परन्तु इस पाठ में हम इसी तथ्य पर ध्यान दें कि वास्तविक विश्वास हमें ''अदृश्य को देखने'' के योग्य बनाता है। अन्य वचनों में ज़ोर दिया गया है कि मसीही व्यक्ति के पास इस संसार के आगे देखने की योग्यता है (देखें रोमियों 1:20; 8:24, 25; 15:21)। इब्रानियों 11 में हमें पता चलता है कि हम *विश्वास* की आंखों से देख सकते हैं (आयतें 1, 3, 7, 9, 10, 13, 27)। अदृश्य को देखने के लिए देखने की योग्यता चाहिए ...

- आत्मिक बातों की वास्तविकता और यह तथ्य कि ये बातें शारीरिक और अस्थाई बातों से अधिक महत्वपूर्ण हैं।
- घटनाओं के विवरण की सच्चाई (चाहे हम वहां नहीं थे) क्योंकि परमेश्वर ने उस विवरण की प्रेरणा दी, और उन घटनाओं से सीखे जाने वाले सबक।
- परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का पक्का होना, चाहे उन प्रतिज्ञाओं का पूरा होना भविष्य में बहुत देर में हुआ।

विश्वास जो अदृश्य को देखता है परमेश्वर द्वारा दिए गए वचन पर आधारित है, जो सब कुछ जानता है और झूठ नहीं बोल सकता!

असली विश्वास का वर्णन (11:1-3, 6)

आश्वासन और स्वीकृति (11:1-3)

आयत 1 में ''आशा'' शब्द ''नीचे खड़ा'' के अर्थ वाले एक मिश्रित यूनानी शब्द *huposta-*

sis से यानी जो हमें परिस्थितियों या कठिनाइयों के नीचे खड़े होने (सहने) के योग्य बनाता है, लिया गया है।[1] ''प्रमाण'' का अनुवाद KJV से मेल खाता है। यह कानूनी अदालतों में इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द था। बाइबल का विश्वास आंख मूंदकर आशावादी होना या बनावटी ''आशा है'' की भावना नहीं है। निश्चित रूप में यह ''प्रमाण के बजाय विश्वास करना'' नहीं है, बल्कि यह, यह यकीन और पक्का होना है कि यह हर प्रमाण के साथ मेल खाता है। यह परमेश्वर की पक्की गवाही पर आधारित है।

आयत 2 का आरम्भ ''क्योंकि इसी के'' अर्थात ''ऐसे ही विश्वास से'' के साथ होता है। ''प्राचीनों की'' इस संदर्भ में चर्चा की गई है। ''गवाही'' इस अध्याय का महत्वपूर्ण विचार है। आयत 2 में यूनानी शब्द का अनुवाद ''गवाही दी गई'' (*martureo*) का आयत 4 में अनुवाद ''गवाही दी गई'' है जो परमेश्वर की गवाही की बात करता है कि इन लोगों ने उसकी स्वीकृति पाई। उन्हें परमेश्वर की ओर से प्रतिफल मिला, क्योंकि उन्होंने सच्चे विश्वास को दिखाया था। इब्रानियों की पुस्तक के मूल पाठकों को परमेश्वर को भाने के लिए ऐसे ही विश्वास का होना आवश्यक था, और हम में भी।

आयत 3 में हमें उस विश्वास का एक उदाहरण मिलता हैं जो अदृश्य को देख सकता है। अध्याय 11 पुराने नियम के मुख्य लोगों और घटनाओं की एक समीक्षा देता है। उत्पत्ति 1:1 से बढ़िया आरम्भ और कहां से हो सकता है ? परमेश्वर ने *बात की* और संसार अस्तित्व में आ गया। (उत्पत्ति 1; भजन संहिता 33:6)। हमें कैसे मालूम ? हमारे लिए इसे जानने का एकमात्र ढंग यही है कि वह हमें बताए। हम इसे विश्वास के द्वारा, अर्थात उसके वचन में विश्वास से जानते हैं।

आवश्यकता और प्रकृति (11:6)

आयत 6 में असली विश्वास की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया है। (''अनहोना'' और ''चाहिए'' शब्दों को देखें।) इसके अलावा हमें असली विश्वास की प्रकृति पर और बातें पता चलती हैं। हमें यह मानना आवश्यक है कि परमेश्वर है और यह भी कि वह ''प्रतिफल देने वाला'' (व्यक्तिगत परमेश्वर) है। ''अपने खोजने वालों'' वाक्यांश को नज़रअन्दाज़ न करें। KJV में ''जो उसे सच्चे मन से ढूंढ़ते हैं।'' परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी तलाश करें ताकि हम उसकी इच्छा को जानने और पूरा करने का प्रयास करें। यह विचार अध्याय के मुख्य बल के लिए एक अच्छा परिचय है।

असली विश्वास दिखाया गया (11:4, 5, 7)

चार विषय

अध्याय का शेष भाग पुराने नियम के उन लोगों के उदाहरणों से भरा है जिन्होंने असली विश्वास को दिखाया। उदाहरणों की बातें अलग-अलग हैं पर चार विषय बार-बार मिलते या उनका संकेत है। (1) परमेश्वर ने किसी न किसी से बात की। जो कुछ परमेश्वर ने कहा वह अविश्वसनीय या जबर्दस्त लगा हो सकता है, पर तथ्य यह है कि उसने कहा और यही सच था। (2) परमेश्वर ने जिससे बात की उसने उसकी बात पर विश्वास किया और अपनी परिस्थितियां

चाहे जैसी भी हों उसने उसी पर भरोसा किया। (3) उस विश्वास के आधार पर उसने परमेश्वर की बताई बात को माना, इसके परिणाम चाहे जो भी हुए हों। उसने अपना जीवन परमेश्वर को दे दिया। (4) उसने परमेश्वर को प्रसन्न किया, और परमेश्वर ने उसे प्रतिफल दिया।

उन विषयों के तीन उदाहरण

मैं उन चार विषयों को पहले तीन उदाहरण देकर समझाता हूं। आयत 4 हाबिल की बात करती है (देखें उत्पत्ति 4:2-5)। (1) परमेश्वर ने कैन और हाबित को बताया कि क्या करना है (हमें इसका पता ''आवश्यक निष्कर्ष'' से चलता है)। (2) हाबिल ने परमेश्वर पर विश्वास किया, जबकि कैन ने विश्वास नहीं किया। (3) हाबिल ने परमेश्वर की आज्ञा मानी जबकि कैन ने नहीं मानी (उत्पत्ति 4:7; यूहन्ना 3:12)। (4) क्योंकि हाबिल ने परमेश्वर की आज्ञा मानी, उसे परमेश्वर द्वारा स्वीकार किया गया (11:39; देखें मत्ती 23:35)।

आयत 5 में हनोक का उदाहरण है (उत्पत्ति 5:21-24)। (1)परमेश्वर ने हनोक से बात की (जैसा कि इब्रानियों 1:1, 2 में संकेत मिलता है)। (2) हनोक ने परमेश्वर पर विश्वास किया: वह ''विश्वास से'' चलता है। (3) उसने परमेश्वर की आज्ञा मानी: वह विवशस से चला ''चलना'' जीवन शैली का संकेत देता है। हनोक साढ़े तीन सदियों तक ''परमेश्वर के साथ चलने'' की जीवन शैली से रहा। (4) इसलिए वह परमेश्वर को स्वीकार्य था। उत्पत्ति 5:24 का सप्तत्ति (LXX) अनुवाद कहता है कि हनोक ने परमेश्वर को प्रसन्न किया। कई साल बाद एलिय्याह के उठाए जाने की तरह उसे बिना मरे स्वर्ग में उठा लिया गया।

तीसरा उदाहरण जो हम देखेंगे वह नूह का है (आयत 7; उत्पत्ति 6-9)। (1) परमेश्वर ने नूह से बात की। उसे ''परमेश्वर की ओर से चेतावनी दी गई'' थी। प्रलय की चेतावनी सारी मनुष्यजाति के उस समय के अनुभव के विपरीत थी और यह चेतावनी वास्तविक घटना में एक सौ या अधिक वर्षों के बाद पूरी हुई। (2) नूह ने परमेश्वर पर विश्वास किया: ''विश्वास से ...।'' नूह को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ा कि वह चेतावनी कितनी बेतुकी लगती थी। परमेश्वर ने कहा, और यही काफ़ी था! (3) अपनी कीमत के बावजूद उसने परमेश्वर की आज्ञा मानी। (4) उसे परमेश्वर द्वारा स्वीकार किया गया। उसका परिवार बचाया गया और वह ''उस धर्म का वारिस हुआ जो विश्वास से होता है'' (11:7)। उसे वफ़ादार धर्मियों की मीरास प्राप्त थी।

सारांश

अगली बार जब आप निराश हों तो ''निराशा के लिए परमेश्वर की दवाई'' को याद कर लें। (1) जो कुछ परमेश्वर कहना चाहता है उस पर ध्यान दें। बाइबल पढ़ें। जब उसके वचन में से बताया या प्रचार किया जाता है उसे सुनें, सचमुच में सुनें। (2) परमेश्वर पर विश्वास करें। यदि परमेश्वर ने अपने वचन में कोई बात कही है, तो वह सही है और पक्की है। आप अपना जीवन और अपनी अनन्त आत्मा उसे सौंप सकते हैं! (3) जो कुछ परमेश्वर कहता है वही करें, चाहे जो भी हो जाए। पीछे न हटें। (4) यदि आप भरोसा रखकर आज्ञा मानते हैं तो परमेश्वर आपको स्वीकार कर लेगा और परमेश्वर की ओर से आपको प्रतिफल मिलेगा!

निराशा के लिए यह दवाई कइयों को अधिक ही आसान लगेगी, परन्तु इब्रानियों 11 अध्याय यह दिखाने के लिए कि यह दवाई काम करती है चार सौ वर्षों के उदाहरणों का सर्वेक्षण करता है। क्रूस के इस ओर रहने वाले हमारे जैसे लोगों के दो हज़ार वर्षों के और उदाहरण दिए जा सकते हैं।

टिप्पणी

[1]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजिस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टेस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 120–21.